## भारत में ग्रामीण बस्तियों का वितरण एवं आकार
## (Size and Distribution of Rural Settlements in India)

देश में गाँवों का वितरण असमान पाया जाता है। उत्तर प्रदेश, (उत्तरांचल सहित), जो देश का जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है, सबसे अधिक गाँव रखता है। यहाँ पर 112568 गाँव हैं, जो देश के कुल गाँवों की संख्या का 20.2 प्रतिशत है। मध्य प्रदेश राज्य दूसरा स्थान रखता है, क्षेत्रफल की दृष्टि से यह देश का दूसरा बड़ा राज्य है। यहाँ पर गाँवों की संख्या 71352 है, जो कुल का 12.8 प्रतिशत है, बिहार 67546 गाँवों के साथ तीसरा स्थान रखता है, जो कुल का 12.1 प्रतिशत है। केन्द्र प्रशासित राज्यों में गाँवों की संख्या सबसे कम मिलती है। इन सात प्रदेशों में गाँवों की कुल संख्या 1035 है, जो कुल गाँवों का 0.2% है। इनमें दिल्ली में 467, पाण्डिचेरी में 288, लक्षद्वीप में 21, अण्डमान-निकोबार में 139, चण्डीगढ़ में 23, दादरा-नागर हवेली में 97 गाँव पाये जाते हैं। भारत के राज्यों में गाँवों का वितरण इस प्रकार है।

देश का सबसे घना बसा राज्य केरल 1219 गाँव रखता है, जो कुल भारतीय गाँवों का 0.2 प्रतिशत है जबकि ठीक इसके विपरीत उत्तर प्रदेश के अनेक जनपद इससे कहीं अधिक गाँव रखते हैं। भारत का विशाल मैदान, जो प्रमुखतः पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान व पश्चिम बंगाल राज्यों पर फैला है 272193 गाँव रखता है, जो देश के कुल गाँवों का 47.05 प्रतिशत है। प्रायद्वीपीय भारत के उड़ीसा राज्य में 4655 (8.4%), महाराष्ट्र में 39354 (7.1%), आन्ध्र प्रदेश में 27379 (4.9%) और कर्नाटक में 27028 (4.9%) गाँव पाये जाते हैं।

आकार की दृष्टि से देश के राज्यों में भारी विभिन्नता पाई जाती है। केरल के गाँव आकार की दृष्टि से सबसे बड़े हैं, जबकि अरुणाचल प्रदेश के गाँव सबसे छोटे हैं। पूर्वी राज्यों में त्रिपुरा में गाँवों का औसत आकार 3093 व्यक्ति मिलता है। दक्षिणी राज्यों में तमिलनाडु में गाँवों का औसत आकार 2313 से घटकर 2001 में 2202 रह गया है। गोआ राज्य में 2001 ने औसत आकार में कमी अंकित की है। यह 1673 से घटकर 1638 रह गया है। देश के शेष सभी राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों में गाँवों का आकार प्रभावी रूप से बढ़ा है। पूर्वी व उत्तरी राज्यों के गाँवों में आकार वृद्धि 1991-2001 के दशक में अधिक दिखाई पड़ती है। 2001 में भारत में गाँवों का औसत आकार 1263 है। उत्तरी राज्यों में हरियाणा में गाँव बड़े आकार के हैं। यहाँ पर गाँवों का औसत आकार 2219 है। केन्द्र प्रशासित प्रदेशों में गाँवों का औसत आकार 1860 व्यक्ति मिलता है। यहाँ 1035 गाँवों में 19.25 लाख ग्रामीण जनसंख्या निवास करती है।

## राज्यों में गाँवो का संख्या, कुल जनसंख्या व औसत आकार 1981-2001

| राज्य | गाँवों की संख्या | जनसंख्या (लाख में) | | | औसत आकार | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1981 | 1991 | 2001 | 1981 | 1991 | 2001 |
| आन्ध्र प्रदेश | 27379 | 410.92 | 485.41 | 552.22 | 1500 | 1773 | 2017 |
| असम | 21274 | 178.50 | 198.23 | 232.48 | 839 | 932 | 1093 |
| बिहार[1] | 67546 | 612.16 | 749.69 | 951.22 | 906 | 1110 | 1408 |
| गुजरात | 18114 | 23.30 | 270.01 | 316.97 | 1299 | 1491 | 1750 |
| हरियाणा | 6745 | 101.10 | 122.72 | 149.68 | 1497 | 1819 | 2219 |
| हिमाचल प्रदेश | 16807 | 39.54 | 46.66 | 54.82 | 235 | 278 | 326 |
| जम्मू-कश्मीर | 6477 | 47.36 | 58.79 | 75.64 | 731 | 908 | 1168 |
| कर्नाटक | 27028 | 264.25 | 309.55 | 348.14 | 978 | 1145 | 1288 |
| केरल | 1219 | 206,83 | 213.56 | 235.71 | 16967 | 17520 | 19337 |
| मध्य प्रदेश[2] | 70352 | 415.90 | 507.88 | 609.03 | 583 | 712 | 853 |
| महाराष्ट्र | 39354 | 408.171 | 482.52 | 557.32 | 1037 | 1226 | 1416 |
| मणीपुर | 2035 | 10.48 | 13.21 | 18.18 | 515 | 649 | 893 |
| मेघालय | 4902 | 10.96 | 14.32 | 18.53 | 223 | 292 | 378 |
| नागालैण्ड | 1112 | 6.55 | 10.05 | 161.35 | 589 | 904 | 1471 |
| उड़ीसा | 49553 | 232.64 | 272.80 | 312.10 | 499 | 550 | 630 |
| पंजाब | 12342 | 121.69 | 141.90 | 160.43 | 986 | 1150 | 1300 |
| राजस्थान | 34968 | 271.22 | 338.40 | 432.67 | 775 | 968 | 1237 |
| सिक्किम | 440 | 2.65 | 3.68 | 4.80 | 602 | 838 | 1092 |
| तमिलनाडु | 15831 | 324.76 | 366.11 | 348.69 | 2051 | 2313 | 2202 |
| त्रिपुरा | 856 | 18.28 | 23.35 | 26.48 | 2135 | 2717 | 3093 |
| उत्तर प्रदेश[3] | 112568 | 908.08 | 1113.78 | 1378.50 | 807 | 989 | 1224 |
| पश्चिम बंगाल | 28024 | 346.89 | 493.61 | 577.35 | 910 | 1298 | 1518 |
| अरुणाचल प्रदेश | 3257 | 5.92 | 7.53 | 8.68 | 182 | 231 | 267 |
| गोवा | 412 | 7.36 | 6.89 | 6.75 | 1786 | 1673 | 1638 |
| मिजोरम | 721 | 3.71 | 3.69 | 4.50 | 514 | 512 | 624 |

1. बिहार, झारखण्ड सहित, 2. मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ सहित, 3. उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल सहित

देश के गाँवों को आकार की दृष्टि से छः भागों में रखा गया है। 1991 में 557137 गाँवों में से 1834 गाँव ऐसे हैं, जिनकी जनसंख्या 10000 से अधिक पाई जाती है। 7202 गाँव 5000 से 10000 जनसंख्या वाले और लगभग 406723 गाँव 1000 से कम जनसंख्या

रखते हैं। हिमाचल प्रदेश, मेघालय, नागालैण्ड व सिक्किम राज्यों में कोई भी गाँव 10000 से अधिक जनसंख्या रखने वाला नहीं मिलता है। मेघालय व सिक्किम में तो किसी भी गाँव की जनसंख्या 5000 से अधिक नहीं है। केरल राज्य में 10000 से अधिक जनसंख्या वाले गाँव सबसे अधिक संख्या में मिलते हैं। ऐसे गाँवों की संख्या 905 है, जो देश के ऐसे कुल गाँवों की 49.3 प्रतिशत है, जबकि यह गाँव राज्य के कुल गाँवों का 74.24 प्रतिशत हैं। 10000 से अधिक जनसंख्या वाले गाँवों का वितरण तथा उनका प्रतिशत कुछ प्रमुख राज्यों में इस प्रकार है—बिहार 192 (10.5%), तमिलनाडु 182 (9.9%), आन्ध्र प्रदेश 163 (8.9%), महाराष्ट्र 116 (6.3%)। केरल राज्य में लम्बी व संकरी तटीय पेटी पर जनसंख्या के भारी दबाव के कारण अधिकांश गाँवों ने बड़ा आकार ग्रहण कर लिया तथा यह गाँव नगर बनने की दिशा में बढ़ रहे हैं। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार व उड़ीसा में सबसे छोटे आकार वाले गाँवों की संख्या सबसे अधिक पाई जाती है।

देश की ग्रामीण जनसंख्या का अधिकांश भाग छोटे अथवा बड़े एकाकी (nuclear) गाँवों में रहता है। बिखरे गाँवों के क्षेत्र काफी कम हैं। हमारे देश में कृषि फार्म गृह (homestead) की जगह पुरवे (hamlet) मिलते हैं। यह बात पहाड़ी क्षेत्रों पर भी लागू होती है, जहाँ पर आदिम जातियाँ निवास करती हैं। प्रत्येक गाँव कच्चे मकानों का पुँज है। उनकी निर्माण सामग्री की भिन्नता स्थानीय उपलब्धता पर निर्भर करती है।[1]

गाँव अधिकतर उत्तरी भारत में गंगा मैदान और दक्षिण की नदी घाटियों तथा डेल्टा प्रदेश में मिलते हैं। बड़े गाँवों का आधिक्य उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, प० बंगाल और तमिलनाडु में है जहाँ कृषि भूमि का विकास काफी अधिक हुआ है। छोटे गाँव मुख्यतः राजस्थान, असम, झारखण्ड, छत्तीसगड़, मध्य प्रदेश और उड़ीसा में पाये जाते हैं, जहाँ जल-प्रवाह प्रतिकूल अथवा शुष्कता का साम्राज्य है या भूमि ऊँची-नीची अधिक है।

## ग्रामीण बस्तियों के प्रकार
## (Types of Rural Settlements)

भारत ग्रामीण अधिवास का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करता है। ग्रामीण बस्तियाँ वातावरण और मानव द्वारा अधिकृत दृश्यों के पारस्परिक सम्बन्धों को दर्शाती हैं।[2] रूसो विद्वान ने बताया है कि ग्रामीण बस्तियों की व्यवस्था भौगोलिक तत्वों का परिणाम है, जो मकानों के एकत्रीकरण और उनके पारस्परिक सम्बन्धों के बारे में बताती है।[3] वास्तव में एक ग्रामीण बस्ती प्रमुख रूप से कृषि वर्कशाप है। इसी कारण इसको भूमि से अलग नहीं किया जा सकता। इसका उपभोग

1. 'Each village is a cluster of shabby houses which are made mostly of mud walls in Ganga plain and North-West India and of woven mat of split bamboo, sometimes plastered with mud in the more rainy eastern India and coastal lowlands.'

2. 'Rural settlements show the reciprocal relationship of human occupance features and environment.' —R. L. Singh

3. 'Arrangement of rural settlements as geographical entities is to express, the grouping of dwellings and their interrelationship.'

इस बस्ती द्वारा ही सुनिश्चित किया जाता है। इसका आकार और एकत्रीकरण बस्ती के कार्यों, कृषि तकनीक तथा मिट्टी के उपभोग पर निर्भर करता है।[1]

बस्तियों के प्रकार (types) बस्ती में मकानों की संख्या और मकानों के बीच में पारस्परिक दूरी के आधार पर निश्चित होते हैं। ये प्रकार भौतिक व साँस्कृतिक तत्वों के कारण जन्म लेते हैं। इन्हीं के कारण ग्रामीण बस्तियाँ सघन अथवा बिखरे रूप में बस जाती हैं। सघन बस्तियाँ केन्द्रोन्मुखी (centripetal) शक्तियों का परिणाम होती हैं, जबकि बिखरी बस्तियाँ केन्द्राभिमुखी (centrifugal) शक्तियों का परिणाम होती हैं। इन प्रकारों को चार वर्गों में रखा जाता है—

## 1. सघन बस्तियाँ (Compact Settlements)

सघन बस्तियों को **ब्रून्स विद्वान** ने संकेन्द्रित बस्तियों (concentrated settlements) के नाम से पुकारा है। **ब्लाश** ने इन्हें पुन्जित (clustered) बस्तियाँ कहा है, जबकि **फ्रिंच** और **ट्रिवार्था** ने इनका नाम न्याष्टिक (nucleated) बस्तियाँ रखा है। **ओ० एच० के० स्पेट** ने इन्हें एकत्रित (agglomerated) बस्तियाँ कहकर पुकारा है।

सघन बस्तियाँ सभ्यता की सीढ़ी की सूचक हैं। ये बस्तियाँ धरातल की एकरूपता, मिट्टी की अधिक उत्पादकता, वर्षा की पर्याप्त मात्रा, पीने के पानी की पर्याप्त सुविधा, विकसित कृषि व्यवस्था का परिणाम हैं। **ब्लाश** ने कहा है कि पुन्जित बस्तियाँ समान उपजाऊ धरातल वाले क्षेत्रों में पाई जाती हैं जहाँ भूमि के उपयोग की बहुत गुंजाइश होती है।[2]

पशुपालन, मण्डी और बाजारों से परिपूर्ण कृषि के विस्तृत क्षेत्रों के बीच प्राचीन जल-कपाटों द्वारा बाढ़ पर नियनत्रण और ऊँची भूमि के निकट कुओं का खोदना आदि कार्यों के लिये सहयोग की आवश्यकता पड़ती है, अतः इस आपसी सहयोग ने लोगों को पास-पास बसने में मदद की है। सार्वजनिक कारणों का भी इन बस्तियों को सघन बनाने में महत्वपूर्ण हाथ है। विदेशी व मुस्लिम आक्रान्ताओं के कारण इन बस्तियों में मकान पास-पास व सटे हुये बने हैं।

सघन बस्तियों की सबसे बड़ी विशेषता मकानों का एक ही स्थान पर सटकर बसा होना है। यह प्रायः गाँव में मध्यवर्ती बसाव स्थान रखने वाली बस्तियाँ हैं।[3] जिन कारणों ने इन बस्तियों को सघन रूप प्रदान किया है उनको इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है—

**(1) भूमि की समरूपता और उसकी उत्पादकता**—गंगा के मैदान में भूमि की समरूपता व उसकी पर्याप्त उत्पादक शक्ति ने बस्तियों को सघन बसने के लिये प्रेरित किया है। डिमाँजियाँ

---

1. 'A rural settlement is mainly an agricultural workshop and as such, it cannot be separated from the land whose use it ensures. Its shape and arrangement are often in strict accord with the kind of work, the argicultural technique and the way, the soil is used.' —A. V. Perpillou.

2. 'The clustered village is indigenous in districts where the arable area is continuous admitting of uniform and extensive exploitation.'

3. 'The chief features of this type of settlement is the concentration of almost all the dwellings of a mauza in one central site.' —Enayat Ahmed.

कहा है कि सघन बस्तियाँ उन भूमियों पर बसी हैं, जो प्रारम्भ से ही उपजाऊ थीं। उनकी अधिक उत्पादकता ने लोगों को एक स्थान पर रहने में सहायता की है।

**(2) भूमि जल की अपेक्षतया कमी व भूमिगत जल का गहरा होना**—गंगा के मैदान में बस्तियों के प्रकार और वर्षा की प्रकृति एवं जल की प्राप्ति के बीच सम्बन्ध पाया जाता है। मैदान के पश्चिमी भाग में तालाबों, झील के निकट ही बस्तियाँ पाई जाती हैं। ये तालाब सिंचाई, चारागाह व अन्य कार्यों के लिये जल प्रदान करते हैं। इसलिये मकान इनके निकट ही बस जाते हैं। भूमिगत जल के गहरा होने से कुओं को खोदने व उनसे पानी निकालने में कठिनाई होती है इसलिये कुओं के निकट ही बस्ती सघन रूप से बस जाती है। ट्रांस-यमुना मैदान में सघन बस्तियाँ भूमिगत जल के अधिक गहरा होने के कारण बसी हैं। दोआब मैदान में जब से नहरें बनी हैं तब से भूमिगत जल का तल ऊँचा हो गया है लेकिन इसने बस्तियों के सघन रूप को प्रभावित नहीं किया है।

**(3) कृषि में सहयोग की आवश्यकता**—कृषि कार्य में विभिन्न समुदायों के सहयोग की आवश्यकता के कारण भी बस्तियों को सघन रूप मिला है। खेतों की खुदाई, जुताई, बुवाई, फसल काटने जैसे कार्यों के लिये अनेक प्रकार के लोगों की आवश्यकता होती है इसलिये अनेक प्रकार के लोग एक स्थान पर बसने के लिये प्रेरित हुये और बस्तियों को सघन रूप मिला।

**(4) खेतों का बिखरा होना**—गाँव में बस्ती से लगी भूमि सबसे अधिक उपजाऊ होती है। उसके बाहर कम उपजाऊ तथा बाहरी किनारे पर सबसे कम उपजाऊ भूमि होती है। एक किसान के खेत इन तीनों प्रकार की भूमि में बिखरे होते हैं। इनमें से एक किसान सबसे अधिक उपजाऊ भूमि के निकट रहना चाहता है, क्योंकि उससे उसे अधिक उत्पादन प्राप्त होता है। इसलिये गाँव के मध्य भाग में बस्ती सघन रूप से बस जाती है।

**(5) वंश एकात्मता** (clan solidarity)—वे वंश व जातियाँ जो कृषि कार्य में एक-दूसरे को सहयोग दे सकी हैं, एक स्थान पर बस गयी हैं। गंगा के मैदान में जाट, गूजर और ठाकुर वंशों की एकात्मकता ने गाँवों को सघन रूप प्रदान किया है।

**(6) सामाजिक एवं आर्थिक बन्धन**—सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से पारस्परिक निर्भरता ने लोगों को साथ-साथ रहने को प्रेरित किया है। भूमिहीन मजदूर, कृषक, व्यापारी, किरायेदार, पुजारी, शिल्पकार आदि लोग अपने व्यवसाय के लिये एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं।

**(7) धर्म एवं अन्धविश्वास**—लोग जहाँ पर पहले से बस गये हैं वह उस जगह को छोड़कर नहीं जाना चाहते। यह गाँव के बाहर के स्थान को देवताओं का स्थान समझते हैं तथा पूज्य लोगों की बिना आज्ञा के और कहीं बाहर जाकर नहीं बसना चाहते हैं, इस कारण ये बस्तियाँ सघन रूप ग्रहण करती जा रही हैं।

**(8) असुरक्षा की भावना**—प्रारम्भिक काल में सुरक्षा की भावना ने बस्तियों के प्रकारों को प्रभावित किया है। गंगा मैदान का पश्चिमी भाग विदेशी व मुगल आक्रान्ताओं तथा अनेक युद्धों आदि के कारण असुरक्षित रहा है जिसकी वजह से लोगों को एक स्थान पर साथ मिलकर रहने के लिये बाध्य होना पड़ा है।

वितरण

सतलज-गंगा का मैदान इस प्रकार की बस्तियों से सुसज्जित है। पंजाब, हरियाणा, गंगा-यमुना दोआब, गंगा के मैदानों में इलाहाबाद से वाराणसी तक, उत्तरी मध्य बिहार तथा निम्न गंगा मैदान में बड़ी-बड़ी नदियों के ऊँचे किनारों पर सघन बस्तियाँ मिलती हैं। ये बस्तियाँ कहीं-कहीं आकार में इतनी बड़ी हैं, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के पश्चिमी मैदानी भागों में, कि ये बड़े कस्बे के रूप में दिखाई देते हैं।

**(i) ऊपरी दोआब**—यहाँ बस्तियों के सघन रूप वास्तविक रूप में सघन हैं। ये बस्तियाँ प्रमुखतया बड़े आकार वाली हैं। यह दोआब अपेक्षतया एक शुष्क प्रदेश है। यहाँ वर्षा का औसत 75 सेमी० से कम रहता है। यह सपाट व उपजाऊ मैदान है। यहाँ भूमि की उत्पादकता, एकसारता, कुओं की न्याष्टिकता, राजपूत, जाट और गूजर सम्प्रदाय की एकात्मकता तथा भूतकाल में असुरक्षा की भावना ने बस्तियों को सघन रूप प्रदान किया है।

**(ii) मध्य एवं निम्न दोआब**—यहाँ की सघन बस्तियाँ विशेषीकृत बस्तियाँ हैं, लेकिन ऊपरी दोआब की अपेक्षा आकार में छोटी हैं। यहाँ पर गाँव पास-पास बसे हैं।

**(iii) ट्रांस-यमुना मैदान**—विभिन्न आक्रमणों व पानी के अपेक्षतया भारी अभाव ने बस्तियों को सघन रूप प्रदान किया है। इस मैदान का मथुरा जिले का भाग दोआब की भाँति सघन बस्तियाँ रखता है, जबकि आगरा व इटावा जिलों के भाग यमुना नदी के उत्तरी भाग की भाँति अर्थात् इन जिलों के भू-भाग दोआब की सघन बस्तियों जैसी बस्तियाँ रखते हैं।

**(iv) बुन्देलखण्ड उच्च प्रदेश**—यह क्षेत्र मराठा साम्राज्य के साथ-साथ बुन्देल राज्यों में परस्पर संघर्षों से प्रभावित रहा है। प्रायद्वीपीय भारत व उत्तरी हिन्दुस्तान के शासकों के बीच मध्यवर्ती स्थिति के कारण भी अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा है। धरातल काफी सख्त है तथा कृषि-क्षेत्र बिखरे रूप में मिलते हैं। लेकिन यहाँ पर पहाड़ियों ने सघन बसाव को आकर्षित किया है। यहाँ के अनेक गाँव भूतपूर्व राजाओं व प्रमुखों के गढ़ रहे हैं और उन्होंने किलों के निकट कृषकों को एकत्र करके उन्हें सुरक्षित आश्रय प्रदान किया जिससे बस्तियों को सघन रूप मिला। पानी की कमी का भी उस पर प्रभाव पड़ा है।

**(v) ऊपरी गंगा-घाघरा दोआब**—यहाँ के गाँव सघन हैं। आकार में छोटे हैं तथा एक-दूसरे के काफी समीप बसे हैं। गाँवों का आकार छोटा होने के कारण उनका कई उपविभागों के रूप में बस जाना, भूमिगत जल का ऊँचा होना, भारी वर्षा व निम्न कृषक जातियों का होना है। रुहेलखण्ड में असुरक्षा की भावना के कारण सघन बस्तियों का सबसे अधिक विकास हुआ है।

**(vi) तराई प्रदेश**—असुरक्षा, चोरी का भय, जंगली जानवरों का डर, वर्षा काल में नदियों का अनियंमित जल-प्रवाह, मलेरिया-ग्रस्त नम जलवायु, पानी की अधिकता, धान की खेती आदि बातों ने बस्तियों को सघन रूप प्रदान किया है।

गंगा, घाघरा और राप्ती जैसी बड़ी नदियों के किनारे के भू-भाग भी सघन बस्तियों में सुसज्जित हैं। यहाँ पर बाढ़ से सुरक्षित संकरे व उच्च स्थलों पर गाँव बस गये हैं। कुओं की

स्थिति ने भी इनको सघन रूप प्रदान किया है। राप्ती के खादर में गाँव बड़े व सघन मिलते हैं। राप्ती व छोटी गंडक के बीच के भू-भाग में छोटे व सघन गाँव पाये जाते हैं।

(vii) **मध्य गंगा मैदान**—यहाँ स्थित बिहार राज्य का उत्तरी-पश्चिमी व मध्य-उत्तरी भाग सघन बस्तियाँ रखता है। यहाँ मुजफ्फरपुर के उपजाऊ मैदान, दरभंगा का पश्चिमी भू-भाग, सारन का मध्य भाग मुंघेर जिले की बेगूसराय तहसील और पटना डिवीजन में गंगा के बाढ़ से प्रभावित मैदान में सघन ग्रामीण बस्तियाँ पाई जाती हैं। उत्तरी भागलपुर जिला भी इसी प्रकार की बस्तियाँ रखता है।

## 2. संयुक्त बस्तियाँ (Composite Settlements)

**इनायत अहमद** ने इस प्रकार की बस्तियों को पुंजित व पुरवा (clustered and hamlet) नाम दिया है। वे सघन बस्तियाँ जो प्रमुख बस्ती के साथ-साथ एक या एक से अधिक पुरवे रखती हैं, संयुक्त बस्तियाँ कहलाती हैं।[1]

यह वास्तव में मध्यवर्ती प्रकार की बस्तियाँ हैं जो अपखण्डित और सघन बस्तियों के क्षेत्र के बीच के भू-भाग पर पाई जाती हैं।[2] इन बस्तियों में जनसंख्या न तो अनेक अलग-अलग पुरवों में फैली होती है और न ही एक पुंज में संघटित रहती है। प्रमुख बस्ती के बाहर एक या दो पुरवों का स्थापित होना बस्ती के अपखण्डित होने की ओर संकेत करता है। इस पर संगठन व विघटन दोनों ही कारकों का प्रभाव पड़ता है। गाँव के मुख्य भाग में जब बस्ती का अधिक घना बसाव हो जाता है तो कुछ लोग गाँव की सीमा के भीतर, मुख्य बस्ती से दूर अपने खेतों के समीप ही मकान बनाकर रहने लगते हैं और इस प्रकार प्रमुख बस्ती का अपखण्डन शुरू हो जाता है। विभिन्न जाति-समुदाय व वर्गों के कारण भी इन संयुक्त बस्तियों का जन्म हुआ। एक सी जाति व समुदाय के लोगों ने गाँवों के मुख्य भाग से दूर लेकिन गाँव की सीमा के भीतर अपना एक अलग पुरवा स्थापित कर लिया और यह पुरवे की सीमा उस जाति-समुदाय के नाम से सम्बोधित की जाने लगी जैसे बावनटोली, चमारटोली, कोढीटोली आदि।

हमारे देश के मैदानी भाग में ये बस्तियाँ इन स्थानों पर मिलती हैं—(i) गंगा-घाघरा दोआब के पूर्वी भाग में, (ii) मध्य गंगा मैदान के विशेषतः गंगा खादर क्षेत्र में, (iii) रुहेलखण्ड के बाँगर क्षेत्र में, (iv) अवध के मैदान में, (v) दोआब के कुछ भाग में, तथा (vi) मध्य उत्तरी बिहार में।

गंगा-घाघरा दोआब के मध्य में ऊसर भूमि काफी अधिक मिलती है तथा पानी का तल भी अपेक्षतया ऊँचा पाया जाता है। इन कारणों ने बस्तियों को संयुक्त रूप प्रदान किया है। ट्रांस गंगा मैदान, जो इलाहाबाद के पूर्व में और गंगा नदी के दक्षिणी भाग में स्थित है, में भी इन्हीं कारणों से संयुक्त बस्तियाँ पाई जाती हैं। यह ट्रांस-यमुना मैदान की अपेक्षा अधिकतर

---

1. 'The fundamental characteristic is one main settlement with two or more hamlets around the central site.' —Enayat Ahmed.

1. 'The semi-compact settlement is an intermediate type between the zones of compact and sprinkled settlement.' —R. B. Mandal

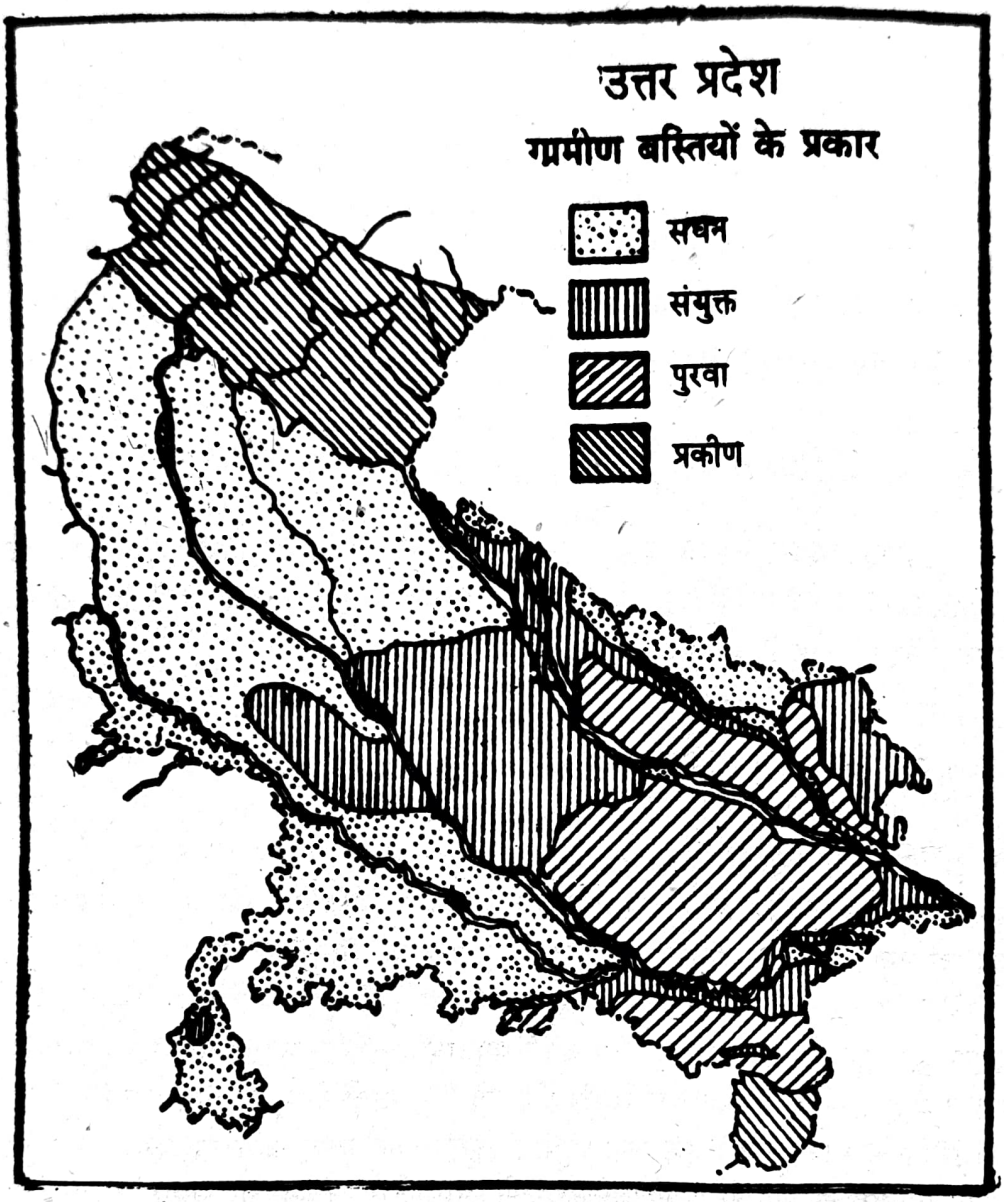


डॉ० इनायत अहमद के अनुसार

प्रदेश हैं तथा भूमि में जल केवल 10 से 15 मीटर की गहराई पर पाया जाता है। यहाँ की दोमट मिट्टी ट्रांस-यमुना मैदान की सख्त काली मिट्टी की अपेक्षा अधिक उपजाऊ है। अवध मैदान में से संयुक्त बस्तियाँ जमींदारों के प्रयासों के परिणाम हैं। इन्होंने पुरवों को बसाने में लोगों की आर्थिक मदद की तथा इसके बदले में उनसे उस भूमि का लगान वसूल किया, जिसको उन्होंने कृषि के विस्तार के लिये उन्हें सुपुर्द किया था।

मध्य गंगा मैदान में बिहार का सारन जिला व चम्पारन जिले का सदर उपविभाग संयुक्त प्रकार की बस्तियाँ रखता है। यहाँ पर चूनायुक्त मिट्टी मिलती है। मिट्टी में चूने के कंकर भी मिलते हैं तथा पानी के ऊँचे तल ने बस्तियों को संयुक्त रूप प्रदान करने में भारी मदद की है। पानी की सुविधा की वजह से मुख्य बस्ती के बाहर भी उसकी उप-बस्तियाँ स्थापित हो गयी हैं। यह क्षेत्र बाढ़ के प्रभाव से भी युक्त है। ये बस्तियाँ सामाजिक दूरियाँ बढ़ाती हैं तथा सांस्कृतिक सम्बद्धता को कम करती हैं।

गंगा-कोसी नदियों के बीच का भू-भाग तथा बागमती-कमला नदियों के मैदान में भी संयुक्त बस्तियाँ पाई जाती हैं। यहाँ पर भी पानी का ऊँचा तल बस्तियों के संघटन व विघटन का प्रमुख कारण है। भागलपुर जिले के दक्षिणी-पूर्वी भाग में हल्की पीली मिट्टी मिलती है। यह मिट्टी काफी उपजाऊ है, लेकिन पानी का तल काफी ऊँचा है। यहाँ संयुक्त बस्तियों पर इन बातों के साथ-साथ भूतकाल में लुटेरों द्वारा लूटमार का डर रहने का भी प्रभाव पड़ा है।

बिहार के मैदान में भी इस प्रकार की बस्तियाँ गंगा नदी के तट से दूर लेकिन उसके समानान्तर फैली पेटी में पायी जाती हैं।

यहाँ पर संयुक्त बस्तियों का जन्म निम्न कारणों से हुआ है—

(i) तालाब, कुओं और पिने (pyne) सिंचाई की सुविधा,

(ii) गेहूँ, धान और आलू की खेती,

(iii) 125 सेमी० से कम वर्षा।

यहाँ के गाँव अपने मध्य भाग में काफी सघन हैं, क्योंकि इनका बसाव-स्थान ऊँचे सुरक्षि स्थल पर है, जो स्थायी बस्तियों के लिये उपयुक्त है। इस अति सघनता में गाँव के उस भाग में भूमि की कीमत काफी बढ़ा दी है, जिसने केन्द्राभिमुखी शक्ति के रूप में कार्य किया है। कीमतें अधिक होने के कारण ग्रामवासियों को अपने मकान बनाने के लिये गाँव की सीमा के भीतर अन्य बसाव-स्थान को ढूँढना पड़ता है, जो अपेक्षतया कम सुविधाजनक है, लेकिन उनके खेतों के अधिक समीप है। कृषि सहयोग की आवश्यकता सिंचाई के लिये अहार (ahars) व पिने (pynes) का निर्माण, वर्षाकाल में यदा-कदा बाढ़ का आना ऐसे अन्य कारण हैं जिन्होंने ग्रामवासियों को इन पुरवों में एकत्र होने को प्रेरित किया है।

## 3. उपखण्डित बस्तियाँ (Fragmented Settlements)

इन बस्तियों को पुरवा बस्तियों (Hamleted Settlements) का नाम भी दिया गया है। **आर० बी० मण्डल** ने इन्हें अर्द्ध-छितरी (semi-sprinkled) बस्तियों के नाम से पुकारा है। इस प्रकार की बस्तियों में मकान एक-दूसरे से अलग-अलग एक ही बस्ती में बसे होते हैं। कुछ बस्तियाँ प्रमुख बस्ती रखने के साथ कई छोटे-छोटे पुरवों में बँटी होती हैं। यहाँ तक कि कहीं-कहीं एक बस्ती 50 या 60 तक असम्बद्ध बसाव-स्थानों में बँटी होती है। इनको प्रशासकीय व मालगुजारी की दृष्टि से एक ही गाँव माना जाता है। इन गाँवों में प्रत्येक असम्बद्ध बस्ती अलग-अलग जाति के लोगों द्वारा बसी होती है। बस्ती को अपखण्डित करने में जाति-संरचना का सबसे बड़ा हाथ होता है। इन पुरवों या असम्बद्ध बस्तियों के नाम भी जाति के नाम पर रखे जाते हैं। नाम में पहला अक्षर जाति को सम्बोधित करता है तथा दूसरा अक्षर पुरवे को बताता है जैसे धोबिया पुरवा, पाण्डे पुरवा, अहीर पुरवा, लुनियान पुरवा आदि।

इन बस्तियों की उत्पत्ति में जाति-संरचना के साथ-साथ अन्य बातों का भी प्रभाव पड़ा है जिनमें कुछ इस प्रकार हैं—

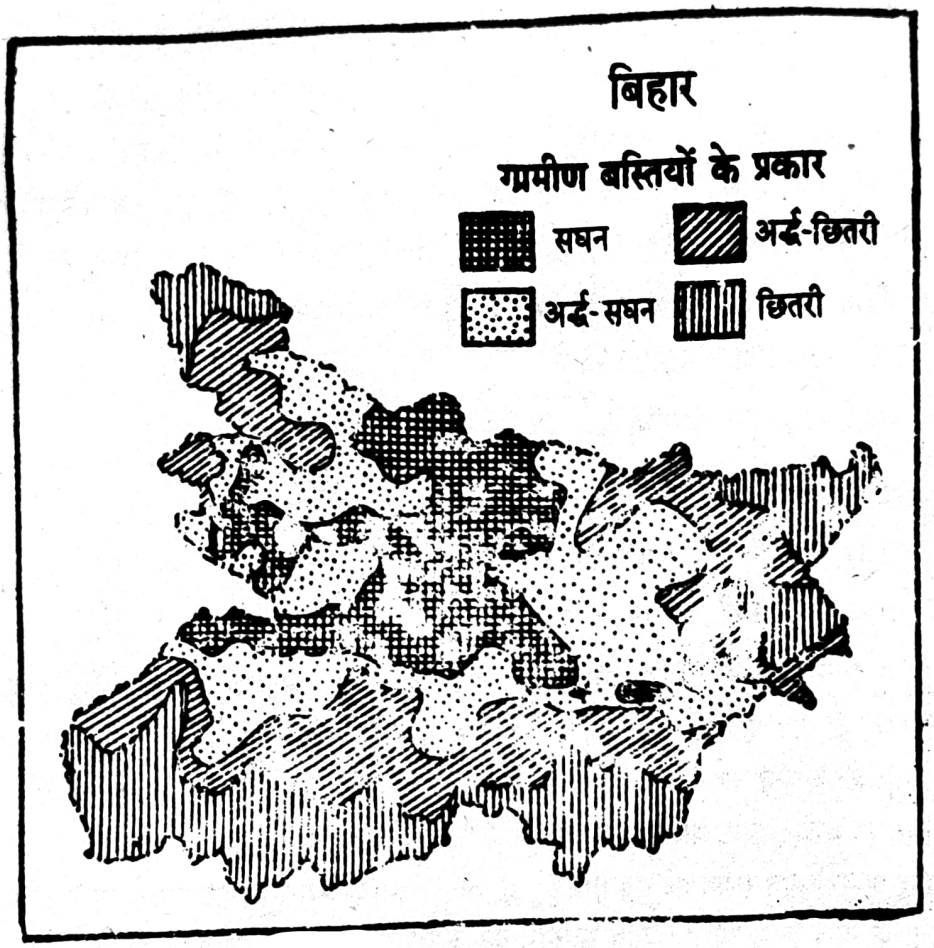


आर० बी० मंडल के अनुसार

(i) धरातलीय जल की पर्याप्त मात्रा में प्राप्ति, (ii) पानी का ऊँचा तल, (iii) कृषि मजदूरों का अधिक संख्या में होना, (iv) जमींदारों द्वारा कृषि भूमि को किराये पर उठा देना, (v) बसाव-स्थान का पूरी तरह सुरक्षित होना, (vi) कुओं के निर्माण पर कम लागत आना, आदि। इन बातों ने बस्तियों के छितराने में मदद की है। कहीं-कहीं भूमि मालिकों ने भी अपनी-अपनी भूमि के निकट ही छोटे-छोटे पुरवों का निर्माण करके बस्ती को छितरा दिया है।

इस प्रकार की बस्तियाँ उत्तर भारत के मैदान में इन घाटियों से लेकर पूर्व में गंगा के डेल्टाई प्रदेश तक पायी जाती हैं। इन बस्तियों में निम्न पाँच प्रमुख क्षेत्र हैं—(i) बंगाल में गंगा के डेल्टा में, (ii) गंगा-घाघरा के दोआब में, (iii) बलिया के पश्चिम में, राप्ती नदी के पश्चिम में और सरयूपार मैदान में, (iv) ऊपरी यमुना और ऊपरी गंगा के बेसिन में बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में, (v) दून घाटियों में।

दून घाटी क्षेत्र में **डॉ० कौशिक** के अनुसार नहरों तथा बाढ़ के क्षेत्रों में यत्र-तत्र उमड़े हुये भू-भागों में अपखण्डित बस्तियाँ पाई जाती हैं। हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ऊपरी यमुना व ऊपरी गंगा के मैदान के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र जैसे अम्बाला, सहारनपुर, बिजनौर, रामपुर और पीलीभीत जिलों में अपखण्डित बस्तियाँ पाई जाती हैं।

गंगा-घाघरा दोआब के जिलों में इस प्रकार की बस्तियाँ अधिक पाई जाती हैं। यहाँ पर बस्ती, गोंडा, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, जौनपुर, बलिया, गोरखपुर जिलों में अपखण्डित बस्तियाँ

मिलती हैं। सुल्तानपुर जिला अपखण्डित बस्तियों वाला जिला है, जहाँ एक गाँव के पीछे पाँच पुरवों का औसत आता है। गोंडा में यह औसत छः का है। इस क्षेत्र के कई गाँवों में तो 50 से लेकर 60 तक पुरवे पाये जाते हैं। इस मैदान के पूर्वी भाग में ऊसर भूमि का प्रतिशत अधिक है तथा भूमि में पानी का तल काफी ऊँचा है।

ट्रांस-घाघरा मैदान अथवा सरयूपार मैदान में भी बस्तियाँ पाई जाती हैं। घाघरा नदी के उत्तर तथा शारदा नदी के पूर्व में फैला यह भू-भाग एक नम क्षेत्र है, जहाँ वर्षा का औसत 1000 से 1250 मिमी० पाया जाता है। यहाँ पानी का तल काफी ऊँचा है अर्थात् कहीं भी पाँच मीटर से नीचा नहीं है। तराई भू-भाग को छोड़कर लगभग एक-तिहाई भाग खादर क्षेत्र है। इन सब परिस्थितियों के कारण ही यहाँ अपखण्डित बस्तियाँ पाई जाती हैं।

उत्तर प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी उच्च प्रदेश में इस प्रकार की बस्तियाँ मिलती हैं। वाराणसी व मिर्जापुर जिलों में इनका विस्तार है।

**डॉ० मंडल** के अनुसार, 'बिहार राज्य में सम्पूर्ण दक्षिणी उच्च मैदानी भू-भाग, पूर्णिया का पश्चिमी अर्द्ध-भाग और मध्य चम्पारन जिला अपखण्डित बस्तियों से सुसज्जित है। दक्षिण के उच्च मैदानी भू-भाग में कम वर्षा व भूमि की कम उत्पादकता ने लोगों को एक स्थान पर मकानों का जमाव करने से रोक दिया है। पूर्णिया जिले में उदासीन जलवायु (dmap climate) तथा जलाक्रान्ति (water logging) के कारण सघन जनसंख्या नहीं पाई जाती है। जनसंख्या एक स्थान पर रहकर जीवन-यापन की सुविधा नहीं रख सकती, इसलिये जनसंख्या नदियों के किनारे सुरक्षित स्थलों में पुरवा बस्तियों में बस जाती है। चम्पारन जिले के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में गंडक नदी के तटीय किनारे पर अपखण्डित बस्तियाँ मिलती हैं। गया जिले के मध्य भाग में भी इस प्रकार की बस्तियाँ कम उपजाऊ मिट्टी के कारण मिलती हैं। छोटा नागपुर के पठार पर नहरी सिंचाई सुविधाओं ने लोगों को सड़कों व नहरों के किनारे पर बसने की सुविधा प्रदान की है जिससे उनके बसाव ने अपखण्डित रूप प्राप्त कर लिया है।'

## 4. बिखरी बस्तियाँ (Scattered Settlements)

ये बस्तियाँ प्रकीर्ण (dispersed) या एकाकी (isolated) बस्तियाँ भी कहलाती हैं। **आर० बी० मण्डल** ने इन्हें भी छितरी हुई बस्तियाँ (sprinkled settlements) के नाम से पुकारा है। जब किसी बस्ती में मकान एक-दूसरे से पृथक्-पृथक् बीच में दूरियाँ छोड़कर या कृषि भूमि को छोड़कर बसे होते हैं तो वे बस्तियाँ प्रकीर्ण बस्तियाँ कहलाती हैं। हमारे देश में मकानों के बीच में दूरियाँ होने के कारण ही उन्हें प्रकीर्ण बस्तियाँ कहते हैं।[1]

**ब्लाश** का कथन है कि प्रकीर्ण बस्तियाँ उस स्थान में होती हैं, जहाँ धरातलीय दशा, मिट्टी और जलप्रवाह के विरदन (dissection) के कारण कृषि-योग्य भूमि विभाजित हो जाती है।

1. 'In our country the term dispersal may be regarded as relative. The houses are usually grouped into compact agglomertions. Generally they stand separate from each other though all of them may not be in separate forms in the midst of cultivation.'

—E. Ahmed

बिजनौर के भाभर प्रदेश के वह भू-भाग, जहाँ कृषि काफी समय से होती आ रही है और उसने स्थायी रूप गहण कर लिया है, वहाँ प्रकीर्ण बस्तियाँ पुंजित बस्तियों का रूप ग्रहण करती आ रही है।

उत्तर प्रदेश राज्य में पश्चिमी क्षेत्र की खादर भूमि की अपेक्षा पूर्वी क्षेत्र की खादर भूमि में प्रकीर्ण बस्तियों की अधिकता रहती है। तराई के मैदानों व खादर भूमि में कम मकानों की बिखरी हुई बस्तियाँ पाई जाती हैं। सोनपार प्रदेश, बाँदा व हमीरपुर जिलों के दक्षिणी भाग में ऐसी बस्तियाँ मिलती हैं। धरातल की असमानता, पानी का कुछ ही स्थानों पर मिलना, कम उपजाऊ रेतीली मिट्टी के कारण बस्तियों में बिखराव पाया जाता है।

पश्चिमी मालवा के पठार, पश्चिमी घाट में सतारा से केरल की उच्च भूमि तक, असम के वनों, बिहार तथा उत्तर प्रदेश के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में बिखरी हुई बस्तियाँ मिलती हैं। पश्चिम बंगाल के अधिकांश क्षेत्रों, विशेष रूप से इसके दक्षिणी भाग में, मलाबार और केरल की संकरी तटीय पट्टी पर झोपड़ियाँ पुरवे पाये जाते हैं। ये दोनों ऐसे प्रदेश हैं, जहाँ भारी वर्षा और विपुल जल-पूर्ति बिखरी हुई जनसंख्या को प्रोत्साहन देती है।

गंगा-घाघरा दोआब की दियारा भूमि तथा गंगा-बूढ़ी गंडक दोआब में प्रकीर्ण बस्तियाँ मिलती हैं। बिहारी राज्य के छोटा नागपुर के किनारे के भू-भाग, दक्षिणी उच्च प्रदेश, उप-पहाड़ी प्रदेश, कोसी का मैदान व बाढ़ से प्रभावित क्षेत्र प्रकीर्ण बस्तियाँ रखते हैं। ये सभी क्षेत्र कृषि की दृष्टि से पिछड़े हैं। निचले गंगा मैदान में नदियों के किनारों को छोड़कर अत्यन्त छोटी और बिखरी बस्तियाँ मिलती हैं। वर्षा ऋतु में बाढ़ के कारण भूमि दलदली हो जाती है, फलतः बाढ़ के मैदानों के ऊपरी भागों में बिखरी हुई बस्तियाँ मिलती हैं। इन भागों में सतह के नीचे जल कम गहराई पर ही मिल जाता है अतः सिंचाई के लिये दूसरों के सहयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती। कृषकों के खेत, उनकी झोपड़ियों के निकट ही पाये जाते हैं।

पश्चिमी राजस्थान में शुष्क जलवायु व जल की कमी के कारण बस्तियाँ छोटी व कुछ मकानों के समूह के रूप में बिखरी होती हैं। यहाँ पर खेत विस्तृत और बिखरे होते हैं।

असम के वन क्षेत्र तथा पहाड़ी भागों में बस्तियाँ ढालों पर बिखरी मिलती हैं। निचली भूमि पर मलेरिया का प्रकोप व विषैले कीटाणुओं की अधिकता के कारण बस्तियाँ कम व बिखरी मिलती हैं। दक्षिण के पठार पर, समतल भूमि के अभाव तथा जल-प्राप्ति के एकमात्र साधन तालाब होने से, बस्तियाँ प्रायः तालाबों के सहारे पाई जाती हैं।

## ग्रामीण बस्तियों के प्रतिरूप
## (Pattern of Rural Settlements)

बस्तियों के प्रतिरूप उनकी आकृति के अनुसार होते हैं, इनको मकानों और मार्गों की स्थिति के क्रम और व्यवस्था के आधार पर निश्चित किया जाता है। ग्रामीण बस्तियों की संरचना से तात्पर्य उसकी अवयव संघटन (anatomy) से होता है, जो स्थानीय भौतिक रचना, सामाजिक, आर्थिक तथा ऐतिहासिक प्रवृत्तियों से प्रभावित होती है। इसके प्रभाव के फलस्वरूप ही मकानों के बीच दूरी और सड़कों का विन्यास का एक रूप बन पाता है। यह विन्यास बस्ती के बाह्य और भीतरी रूप को बताते हैं। भारत में ग्रामीण बस्तियों के निम्न प्रतिरूप दिखाई पड़ते हैं—

(1) **रेखीय प्रतिरूप** (Linear Pattern)—सड़क, नदी या नहर के किनारे-किनारे बसे हुये मकानों की बस्तियाँ रेखीय प्रतिरूप रखती हैं। इन मकानों के द्वार सड़क या नहर की ओर होते हैं तथा दोनों किनारों पर बसे हुये मकानों के द्वार परस्पर आमने-सामने होते हैं। गाँव का आकार रेखा की भाँति लम्बा होता है। इस प्रकार के गाँव को रिबन प्रतिरूप (Ribbon pattern) या लम्बाकार प्रतिरूप (Elongated pattern) भी कहते हैं।

इस प्रकार की बस्तियाँ पूर्वी तटीय मैदान, निम्न गंगा मैदान, पूर्वी झारखण्ड, देहरादून घाटी में मिलती हैं। उड़ीसा का समुद्रतटीय मैदान, आन्ध्र प्रदेश का पूर्वी भाग, तमिलनाडु के थंजावुर, रामनाथपुरम, मदुराई और नागरकोइल जिलों में रेखीय गाँव पाये जाते हैं। निम्न गंगा मैदान में नदियों के किनारे आसनसोल, रानीगंज, भागीरथ नदी के पूर्वी भागों में रेखीय बस्तियाँ मिलती हैं। मध्य गंगा मैदान के पूर्णिया जिले में छाड़न झीलों तथा पुराने नदी मार्गों के किनारों पर ऐसी बस्तियाँ मिलती हैं। देहरादून जिले की दून घाटी में भी रेखीय बस्तियाँ मिलती हैं।

(2) **चौक पट्टी प्रतिरूप** (Checker Board Pattern)—मैदानों में दो मार्गों के मिलने के क्रास (cross) पर जो गाँव बसने आरम्भ होते हैं, उन गाँवों की गलियाँ, मार्गों के साथ मेल खाती आयताकार प्रतिरूप में बनने लगती हैं, जो परस्पर लम्बवत् व समानान्तर होती हैं। ये सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती हैं।[1] यह प्रतिरूप रखने वाले गाँव प्रायः आकार में बड़े होते हैं। उत्तर भारत में ऐसे गाँवों की काफी बड़ी संख्या है जिनमें से अधिकांशतः धीरे-धीरे कस्बे बन जाते हैं। गंगा-यमुना दोआब के ऊपरी भाग में ऐसे गाँव अधिक हैं। कर्नाटक व दक्षिणी आन्ध्र प्रदेश में भी ऐसे गाँव पाये जाते हैं।

(3) **अरीय या त्रिज्या प्रतिरूप** (Radial Pattern)—भारतीय गाँवों में यह प्रतिरूप प्रमुख रूप से पाया जाता है। इस प्रकार के गाँवों में कई ओर से मार्ग आकर मिलते हैं या उस गाँव से बाहर अन्य गाँव के लिये कई दिशाओं को मार्ग जाते हैं। इन गाँवों की गलियाँ भीतरी भाग में केन्द्र में आकर मिलती हैं। इन गलियों पर मकान बनते-बनते केन्द्र से बाहर की ओर बढ़ते जाते हैं। गाँव के मध्य में बाजार या मीठे पानी के कुएँ की स्थिति के कारण इस प्रतिरूप का विकास होता है। तमिलनाडु व ऊपरी गंगा मैदान में ऐसे गाँव विशेष रूप से पाये जाते हैं।

(4) **तारा प्रतिरूप** (Star Pattern)—ये गाँव आरम्भ में अरीय प्रतिरूप में विकसित होकर बाद में बढ़ते-बढ़ते बाहर की ओर जाने वाले मार्गों पर फैलते जाते हैं। गाँव के निकट मकान अधिक व दूर जाने पर मकानों की संख्या कम होती जाती है। मध्य गंगा मैदान के बाढ़ वाले क्षेत्रों में ऐसे गाँव पाये जाते हैं। पूर्वी चम्पारन और मुजफ्फरपुर का तराई प्रदेश ऐसे गाँवों की अधिकता रखता है।

(5) **वृत्ताकार प्रतिरूप** (Circular Pattern)—ऐसे गाँव का प्रतिरूप एक ही स्थान पर मकानों के अधिक बसाव के कारण बन जाता है। झील, कुँओं या जमींदार के मकान चारों ओर फैलकर ऐसी बस्तियाँ बनाते हैं। प्राचीनकाल में ऐसी बस्तियों का जन्म सुरक्षा हेतु ही हुआ, जहाँ ग्रामीण जनता अपने घर मुखिया के मकान अथवा गढ़ी के चारों ओर बना लेती थीं।

इस प्रकार के गाँव ऊपरी दोआब, ट्रांस-यमुना क्षेत्र, मध्य प्रदेश, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र के कुछ भागों में पाये जाते हैं। ऊपरी दोआब में सोलानी-रतमाऊ विभाजक क्षेत्र में ऐसे गाँव मिलते हैं। नैनीताल जिले में भीमताल ऐसी ही बस्ती है। बिहार में सारन जिले का गोढिनी व पोखरा, शाहाबाद जिले का बड़ावान ऐसे ही गाँव हैं।

ये बस्तियाँ दो प्रकार की हो सकती हैं—(i) न्याष्टिक (nucleated) बस्ती, ऐसी बस्ती का केन्द्र किसी मुखिया के घर से जुड़ा होता है। (ii) निहारकीय (nebular) बस्ती—ऐसी बस्ती के मध्य में चौपाल, पंचायत घर, वट वृक्ष या देव पूजा स्थान होता है। आदिवासी जनजातियों के गाँव इसी प्रकार के होते हैं।

वृत्ताकार प्रतिरूप उन गाँवों में भी पाया जाता है जहाँ उनका विकास किले के चारों ओर फैलकर हुआ है। दक्षिणी भारत में विशेषतः पालनी पहाड़ियों के उत्तर में, बंगलौर, मैसूर, धारवाड़ क्षेत्रों में; महाराष्ट्र के धूलिया, औरंगाबाद, जलगाँव और अकोला जिले में ऐसे गाँव पाये जाते हैं।

**(6) तीर प्रतिरूप** (Arrow Pattern)—ये गाँव अन्तरीप के सिरे पर या नदी के नुकीले मोड़ों पर बस जाते हैं। दक्षिणी भारत के सुदूर दक्षिणी सिरे पर कन्याकुमारी गाँव, केरल में मुन्नमतुरा गाँव, उड़ीसा की चिल्का झील प्रदेश में सानानैसी गाँव, खम्भात की खाड़ी में गोधा, कुंडा, गोपनाथ गाँव, मध्य प्रदेश में सोनार नदी के एक मोड़ पर असलाना व बामनेर नदी पर सिंहपुर गाँव, बिहार में बूढ़ी गंडक नदी के मोड़ों पर मंझोल, सिवारी, आछा गाँव और बाघमती नदी के मोड़ पर चौथान गाँव तीर प्रतिरूप रखते हैं।

**(7) पंखा प्रतिरूप** (Fan Pattern)—गाँव के एक सिरे पर किसी आकर्षण स्थान (Focal point) के होने पर मकान बस जाते हैं। ये आकर्षण बिन्दु तालाब, नदी का किनारा, सड़क, बाग, बगीचा, महत्वपूर्ण दीवार या पूजा-स्थल के रूप में होता है। गाँव के मकानों की पंक्तियाँ यहाँ पर मिलकर पंखानुमा प्रतिरूप बनाती हैं। डेल्टाई व पर्वतीय प्रदेशों में ऐसे प्रतिरूप बन जाते हैं। गोदावरी, कृष्णा और महानदी के डेल्टा तथा हिमालय के पाद प्रदेशों में जहाँ पर भी काँप पंखे (alluvial fans) मिलते हैं, वहाँ पर पंखा प्रतिरूप रखने वाले गाँव पाये जाते हैं। भागलपुर जिले का भूसिया गाँव इसी प्रकार का गाँव है।

**(8) तिरछी सीवन प्रतिरूप** (Herring-bone Pattern)—एक प्रमुख सड़क पर मिलने वाली कई उप-सड़कों के विकट मोड़ पर मिल जाने से यह प्रतिरूप बनता है। गाँव की मुख्य सड़क काफी महत्व वाली होती है। इसी कारण इससे तिरछी सड़कें आकर मिलती हैं। आर० बी० मण्डल के अनुसार बिहार के मुंगेर जिले का जलालाबाद गाँव इसी प्रकार का गाँव है।

**(9) आयताकार प्रतिरूप** (Rectangular Pattern)—अधिकांश गाँव आयताकार प्रतिरूप रखने वाले होते हैं। इनका प्रमुख कारण खेतों की आकृति का प्रभाव है। गाँवों के खेतों का प्रारूप प्रायः आयताकार होता है। यहाँ पैदल व बैलगाड़ी मार्ग भी इन खेतों के प्रारूप का अनुसरण करते हैं। ऐसे मार्ग के मोड़ कम होते हैं तथा भूमि का अधिक से अधिक प्रयोग सम्भव होता है। इन सब बातों के प्रभाव से ग्रामीण बस्ती की आकृति भी आयताकार बन जाती है। मनसारा में भी ग्रामीण बस्तियों के आयताकार प्रतिरूप का ही वर्णन मिलता है। उत्तर प्रदेश राज्य के वह भू-भाग जहाँ सघन व संयुक्त प्रकार की बस्तियाँ पाई जाती हैं, वहाँ

पर आयताकार प्रतिरूप रखने वाले गाँव पाये जाते हैं। बिहार राज्य में शाहाबाद जिले का एक गाँव, सारन जिले में सारथा और भागलपुर जिले में घोघेली गाँव इस प्रतिरूप का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

**(10) खोखला आयताकार प्रतिरूप** (Hollow Rectangular Pattern)—आयताकार गाँव के मध्य का भाग जब बिना बना रह जाता है तब ऐसा प्रतिरूप बनता है। मध्य का खाली स्थान पुराने किले या स्थानीय प्रमुख व्यक्ति का स्थान होता है, जिसके चारों ओर गाँव फैलकर बस जाता है। पुराने बसाव-स्थान पर अब कहीं-कहीं गाँव के मध्य में किलों के स्थान पर टीले पाये जाते हैं। धार्मिक मान्यताओं के कारण यह टीले खाली स्थान के रूप में रह जाते हैं, क्योंकि कोई भी इस उजड़े बसाव-स्थान को मकान बनाने के लिये पसन्द नहीं करता। कभी-कभी गाँव का मध्य भाग मन्दिर, मस्जिद, तालाब या छायादार वृक्ष रखता है, जहाँ पर ग्रामवासी एकत्र होते हैं तथा सभाओं का आयोजन करते हैं इसलिये यह भाग बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान बन जाता है और मकान इसके चारों ओर फैल जाते हैं। ग्रीष्मकाल में किसान यहाँ दिन में बैठकर छाया का आनन्द लेते हैं तथा शीतकाल में शाम के समय आग जलाकर बैठते हैं तथा आपस में मनोविनोद करते हैं। कहीं-कहीं इन स्थानों पर साप्ताहिक बाजार भी लगते हैं।

**(11) त्रिभुजाकार प्रतिरूप** (Triangular Pattern)—जब कोई सड़क या नहर दूसरी सड़क या नहर से मिलती है परन्तु उसको पार नहीं करती, ऐसे स्थान पर त्रिभुजाकार प्रतिरूप का विकास होता है। मकानों का बसाव सड़क या नहर के किनारे पर जिस ओर से दूसरी सड़क आकर मिलती है तथा मिलने वाली सड़क या नहर के साथ होता है। इस प्रकार गाँव का प्रतिरूप त्रिभुजाकार बन जाता है। पंजाब-हरियाणा में ऐसी बस्तियाँ मिलती हैं।

**(12) सीढ़ी प्रतिरूप** (Terrace Pattern)—इस प्रकार के गाँव पर्वतीय ढालों पर बसे होते हैं यह ढाल के अनुसार विभिन्न ऊँचाई वाले स्थानों पर बसे होते हैं। इनके मकानों की पंक्तियाँ सीढ़ीनुमा मालूम होती हैं, क्योंकि मकान कई स्तरों में (tiers) बसे होते हैं। हिमालय पर्वतीय ढालों, पश्चिमी घाट के ढालों पर इस प्रकार के गाँव बसे मिलते हैं। हिमालय पर्वतीय क्षेत्र में नदियों की घाटियों में, पर्वतकूटों पर, ढाल के अर्द्ध-भागों पर बसे मिलते हैं। इनायत अहमद विद्वान ने इस प्रतिरूप को समोच्च रेखीय प्रतिरूप (Contour Pattern) का नाम दिया है। पहाड़ी क्षेत्रों में खेती का प्रतिरूप सीढ़ीनुमा होता है। यह समोच्च रेखा का अनुसरण करते हैं। बस्ती इस सीढ़ीदार भूमि के ऊपरी भाग पर बस जाती है तथा सीढ़ीदार खेत के समानान्तर फैल जाती है। इस प्रकार यह प्रतिरूप भूमि-उपयोग के कटिबन्धों का परिणाम होता है। यह कटिबन्ध घाटी के तल से लेकर पर्वत के ऊपरी भाग तक फैले होते हैं। बस्ती की आकृति घाटी की ओर उन्नतोदर (convex) प्रकार की होती है तथा यह जब किसी उभार (concave) पर बनी होती है, तब इसकी आकृति नतोदर प्रकार की होती है।

**(13) वर्गाकार प्रतिरूप** (Square Pattern)—वर्गाकार और आयताकार प्रतिरूप दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। गाँव का बसाव-स्थान भौतिक आकर्षण और विकर्षण दोनों ही कारणों से वर्गाकार रूप ले लेता है या फिर आयताकार रूप में बदल जाता है। ऐसा गाँव सड़क या बैलगाड़ी मार्ग के चौराहे पर स्थित होता है। कभी-कभी गाँव पुरानी चहारदीवारी के कारण अपने वर्गाकार प्रतिरूप से बाहर नहीं फैल पाता है। इसके साथ-साथ गाँव के चारों ओर फैले

घने बाग-बगीचे, तालाब व सड़कें भी गाँव के चारों ओर के विस्तार को रोक देती हैं। कभी-कभी गाँव ऐसे मिश्रित वर्गाकार प्रतिरूप बना लेते हैं कि सड़कों के मिलन-स्थल पर चार वर्ग बन जाते हैं और ये चार वर्ग अलग-अलग जाति समूह द्वारा बसे होते हैं। बिहार राज्य के भागलपुर और सारन जिले के कैला कात्सा और साथी इसी प्रकार के गाँव हैं।

**(14) खोखला वर्गाकार प्रतिरूप** (Hollow Square Pattern)—जब एक वर्गाकार प्रतिरूप वाला गाँव का अन्दर का भाग खाली होता है अर्थात् वर्ग के चारों ओर बाहर की ओर मकान बन जाते हैं और बीच में मन्दिर, तालाब, मस्जिद, बाग या चारागाह के कारण अनिर्मित क्षेत्र होता है तब ऐसा प्रतिरूप खोखला वर्गाकार प्रतिरूप कहलाता है। भागलपुर जिले का रंजोधा गाँव इसी प्रकार का गाँव है।

**(15) चौकोर प्रतिरूप** (Block Pattern)—इस प्रकार के गाँव पश्चिमी राजस्थान के मरुस्थलीय भाग में मिलते हैं। गाँव के बाहर चहारदीवारी भी होती है तथा मध्य में खुली आयताकार भूमि छोड़ दी जाती है। मकान ऊँचे-नीचे होते हैं ताकि रेत के तूफानों, चोरों या डाकुओं और शत्रुओं से सुरक्षा की जा सके। हरियाणा, गुजरात में भी इस प्रकार के चहारदीवारी गाँव पाये जाते हैं। यह प्रतिरूप खोखला आयताकार प्रतिरूप से मिलता-जुलता होता है।

**(16) मालानुमा प्रतिरूप** (String Pattern)—जब किसी बाढ़ के मैदान या नहर के किनारे-किनारे काफी दूर तक लम्बाई में मकान बस जाते हैं तब ऐसा प्रतिरूप माला में पिरोये दानों की भाँति लगता है। यह वास्तव में लम्बी और पंक्तिनुमा बस्तियाँ हैं, जो नहर, नदी या सड़क के किनारे-किनारे एक रेखा में बस जाते हैं। यहाँ सभी मकान सड़क या नदी या नहर के, इनमें से जिसके भी किनारे बसे हों, आसान पहुँच में होते हैं।

भाभर प्रदेश के नहरी सिंचित क्षेत्र में ऐसे गाँव विशेष रूप से पाये जाते हैं। यहाँ रंध्रदार शुष्क भूमि होती है, जिसमें भूमिगत जल का अभाव होता है। अतः लोगों के पानी पीने, पशुओं व खेती के लिये नहर के पानी पर ही निर्भर रहना पड़ता है। इस कारण गाँव का हर निवासी नहर के सामने ही बसना पसन्द करता है। कभी-कभी बस्तियाँ दो या दो से अधिक मकानों की मालायें रखती हैं। यह नहर की शाखा की संख्या पर निर्भर करता है। बाढ़-प्रभावित क्षेत्रों, नदियों के ऊँचे किनारों पर भी लम्बी पंक्तिनुमा बस्तियाँ बस जाती हैं। बिहार के सहरसा और पूर्णिया जिलों के बाढ़-प्रभावित नदी तटों पर ऐसी बस्तियाँ मिलती हैं। दक्षिणी-पश्चिम बंगाल, केरल और पश्चिमी तटीय मैदान के पुराने समुद्री किनारों (beaches) तथा डेल्टाई भाग में नदियों की शाखाओं के किनारे के भू-भाग पर मालानुमा प्रतिरूप रखने वाली ग्रामीण बस्तियाँ मिलती हैं।

**(17) एल-आकार प्रतिरूप** (L-shaped pattern)—वह बसाव-स्थान जहाँ से रेखीय शक्तियाँ एक-दूसरे से समकोण बनाती हुई मिलती हैं, वहाँ पर अंग्रेजी के एल-अक्षर जैसा प्रतिरूप बन जाता है। यह आयताकार और वर्गाकार प्रतिरूप का पूरक है। दो रेखीय शक्तियाँ दो सड़कें और गाड़ी मार्ग हो सकती हैं। यहाँ किसी नदी से कोई सड़क समकोण बनाती हुई मिलती है। बिहार राज्य में ऐसे अनेक गाँव मिलते हैं, जो नदी के किनारे विकसित हो गये हैं, जिन्होंने बाद में सड़क के मिलने से एल आकार प्रतिरूप कर लिया है। पटना जिले में दतियाना और मुजफ्फरपुर जिले में नवकढ़ी इसी प्रकार के गाँव हैं।

**(18) दोहरा व्यष्टिक प्रतिरूप** (Double Nucleated Pattern)—जब दो गाँव परस्पर एक साथ ही बसाव-स्थान पर बस जाते हैं, तब ऐसा प्रतिरूप बनता है। यह दोनों गाँव प्रशासकीय व मालगुजारी के उद्देश्य से तो अलग किये जा सकते हैं लेकिन भौगोलिक दृष्टि से इन्हें अलग करना कठिन होता है। कभी-कभी एक गाँव दो स्थानों पर बस जाने से भी ऐसा प्रतिरूप बन जाता है, तब वहाँ भी बस्ती का कुछ भाग बस जाता है। इस प्रकार एक गाँव दो स्थानों पर बस जाता है। उत्तर प्रदेश और बिहार के मैदान में ऐसे गाँव अधिक पाये जाते हैं। दो गाँवों के परस्पर मिलन के रूप में सहारनपुर जिले का भायला गाँव उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करता है। यहाँ पर सड़क के एक ओर भायला कलाँ व दूसरी ओर भायला खुर्द गाँव स्थापित हो गये हैं और दोनों को अलग-अलग पहचानना कठिन है। इसी प्रकार से दो स्थानों पर बसे हुये गाँव के उदाहरण के रूप में सहारनपुर जिले में सरसावा, हरिद्वार जिले में लक्सर, नारसन कलाँ का नाम लिया जा सकता है। बिहार राज्य में दरभंगा जिले के खानपुर और नरहान इसी प्रकार के गाँव हैं।

**(19) अनियमित प्रतिरूप** (Irregular Pattern)—यह प्रतिरूप प्रकीर्ण बस्तियों की अपेक्षा सघन बस्तियों में बनता है। बड़े आकार की सघन बस्तियों में मकान बिना किसी निश्चित प्लान के अनियमित तरीके से एक स्थान पर ऐसे बस जाते हैं कि न तो उनके बाह्य रूप का और न आन्तरिक प्लान का पता लगता है, तब ऐसा प्रतिरूप अनियमित कहलाता है। बिहार के मैदान में ऐसे अनेक गाँव मिलते हैं। **के० एच० बुशमैन** ने भारत का एक मानचित्र बनाकर अनियमित प्रतिरूप वाले गाँवों के वितरण को दर्शाया है।

**(20) अनाकार प्रतिरूप** (Amorphous Pattern)—भारत के अधिकांश गाँव इसी प्रकार के हैं। इनका नाम मार्गों के निर्माण से पूर्व ही हो गया था। प्रत्येक मकान उस स्थान पर बस गया, जहाँ उसको सुविधाजनक स्थान मिल गया। मकान बनने के बाद ही गलियों और सड़कों का विकास हुआ। इसलिये इन बस्तियों की कोई आकृति नहीं बन पाती है। ऐसा गाँव, जहाँ अनेक पुरवे बन जाते हैं, तब वह बहुत छोटे आयत के रूप में होते हैं, एवं प्रमुख बस्ती से विभिन्न मार्गों द्वारा जुड़े हैं, तब बस्ती का कोई प्रतिरूप नहीं बन पाता। इसलिये इसे अनाकार प्रतिरूप में शामिल कर लिया जाता है। उत्तर प्रदेश के मैदानी भाग, बिहार के सारन व चम्पारन जिलों, कोसी के बाढ़-प्रभावित क्षेत्रों में तथा गंगा के किनारे फैली दियारा भूमि के पूर्वी-दक्षिणी भाग तथा झारखण्ड में छोटा नागपुर पठार पर; मध्य प्रदेश के भोपाल, बीना, जबलपुर, उज्जैन आदि क्षेत्रों में; उड़ीसा के जगदलपुर में; आन्ध्र प्रदेश के नालगोंडा, खम्माम, एलूस, करनूल, ओनगोले, कुडप्पा, नैल्लोर आदि क्षेत्रों में; तथा तमिलनाडु के उत्तर-पश्चिमी भाग में अनाकर प्रतिरूप वाली बस्तियाँ पाई जाती हैं।

भारत में पुरातत्वीय सर्वेक्षण विभाग के निर्देशक प्रोफेसर **एन० के० बोस** के अनुसार इस प्रकार के गाँव दक्षिण-पश्चिम उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, मालवा का पठार और महाराष्ट्र के कुछ भाग में हैं। राजस्थान के पश्चिमी भाग में जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में इस प्रकार के गाँवों के साथ प्रकीर्ण गाँव मिलते हैं।

**(21) खोखला वृत्तीय प्रतिरूप** (Hollow Circular Pattern)—वृत्ताकार प्रतिरूप रखने वाला गाँव जब अपने मध्य भाग में कुछ कारणों से मकान नहीं बना पाता, तो उसका प्रतिरूप खाली वृत्तीय कहलाता है। मध्य भाग के मकान न बनने के वही कारण हैं जो खोखले आयताकार या वर्गाकार प्रतिरूप में प्रभावकारी होते हैं। इनसे अन्तर केवल बाहरी आकृति में ही होता है।

**(22) बहुभुजीय प्रतिरूप** (Polygonal Pattern)—यह वृत्ताकार प्रतिरूप का ही विकसित रूप है, जबकि गाँव कुछ सड़कों के सहारे आगे की ओर फैल जाता है और बहुभुजीय रूप ले लेता है। शुष्क क्षेत्रों में बहुभुजीय प्रतिरूप वाले गाँव पाये जाते हैं।